मेंढक और अजनबी

मैक्स

मेंढक और अजनबी

मैक्स

एक दिन, एक अजनबी आया और जंगल के किनारे उसने
अपना तम्बू लगाया. सुअर ने उसे सबसे पहले खोजा.

"क्या आपने उसे देखा?" सुअर ने बतख और मेंढक से मुलाकात के बाद उत्साहित होकर पूछा.

"नहीं, वो देखने में कैसा है?" बतख ने पूछा.

"मेरी राय में तो वो एक गंदे गंदे चूहे की तरह दिखता है," सुअर ने कहा.

"वह आखिर यहाँ क्यों आया?"

"हमें चूहों से सावधान रहना चाहिए," बतख ने कहा. "वे पक्के चोर होते हैं."

"यह आप कैसे जानते हैं," मेंढक ने पूछा.

"हर कोई जानता है," बतख ने गुस्से में कहा.

लेकिन मेंढक उस बारे में इतना निश्चित नहीं था. वो खुद अपने लिए देखना चाहता था. उस रात, जब अंधेरा छा गया तो उसने दूर से एक लाल चमक देखी. मेंढक उसके पास गया.

जंगल के किनारे पर उसने कुछ बांस के फ्रेम पर कपड़े में लिपटा हुआ एक तंबू देखा.

वो अजनबी आग पर एक बर्तन में खाना बना रहा था. खाने में से अच्छी गंध आ रही थी. मेंढक को वहां सब कुछ बहुत अच्छा लगा.

"मैंने उसे देखा है," अगले दिन मेंढक ने दूसरों को बताया.

"और क्या?" सुअर ने पूछा.

"वो एक अच्छा साथी दिखता है," मेंढक ने कहा.

"उससे सावधान रहना!" सुअर ने कहा. "याद रखना वो एक गंदा चूहा है!"

"मैं शर्त लगाता हूं कि वो एक दिन बिना कुछ काम किए हम सब का भोजन खा जाएगा," बतख ने कहा. "चूहे, गंदे और आलसी होते हैं."

लेकिन यह सच नहीं था. चूहा हमेशा व्यस्त रहता था. उसने लकड़ी इकट्ठी की और बड़ी कुशलता से एक मेज और बेंच बनाई. वो गंदा भी नहीं था. वह अक्सर नदी में नहाता था, हालांकि वो कुछ डरावना ज़रूर दिखता था.

एक दिन, मेंढक ने चूहे से मिलने का फैसला किया. चूहा धूप में अपनी नई बेंच पर आराम कर रहा था. "हैलो," मेंढक ने कहा. "मैं मेंढक हूँ."
"मुझे पता है," चूहे ने कहा. "मैं देख सकता हूं. मैं बेवकूफ नहीं हूं. मैं पढ़ सकता हूं और लिख सकता हूं और मैं तीन भाषाएं बोलता हूं - अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन."
मेंढक, चूहे से बहुत प्रभावित हुआ.
यहां तक कि खरगोश भी ऐसा नहीं कर सकता था.

तभी सुअर भी वहां आ पहुंचा.
"तुम कहाँ से आए हो?" उसने चूहे से गुस्से में पूछा.
"हर जगह और कहीं से भी नहीं," चूहे ने शांति से जवाब दिया.
"ठीक है, तुम अपने घर वापिस जाओ," सुअर चिल्लाया.
"यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं है!"
चूहा एकदम शांत रहा.

"मैंने पूरी दुनिया की यात्रा की है," चूहे ने कहा. "यहाँ काफी शांति है
और नदी के पास एक सुन्दर नज़ारा है. मुझे यह स्थान पसंद है."

"मुझे लगता है कि तुमने हमारी लकड़ियां चुराई हैं," सुअर ने कहा.
"मैंने उन्हें इकठ्ठा किया है," चूहे ने एक सभ्य आवाज में कहा.
"यह लकड़ियां सभी की हैं."
"गन्दा चूहा!" सुअर बड़बड़ाया.
"हाँ, हाँ," चूहे ने दुखी होकर कहा. "सब कुछ मेरी ही गलती है.
चूहों को हमेशा हर बात के लिए दोषी ठहराया जाता है."

मेंढक, सुअर और बतख, खरगोश से मिलने गए.
"उस गंदे चूहे को वो स्थान छोड़ना होगा," सुअर ने कहा.
"वहां रहने का उसे कोई अधिकार नहीं है. वह हमारी लकड़ियां चुराता है
और साथ में बदतमीज़ी से पेश आता है," बतख चिल्लाई.
"शांत, शांत," खरगोश ने कहा. "वह हमसे देखने में अलग हो सकता है, लेकिन
वह कुछ गलत नहीं कर रहा है और रही लकड़ियों की बात, वे तो सभी की हैं."

उस दिन से, मेंढक नियमित रूप से चूहे से मिलने जाने लगा. वे बेंच पर कंधे से कंधा मिलाकर बैठते और सुन्दर दृश्य का आनंद लेते थे.
चूहा, मेंढक को दुनिया भर में अपने कारनामों की कहानियां सुनाता था, क्योंकि उसने तमाम देशों की यात्रा की थी और उसने कई रोमांचक अनुभव किए थे.

सुअर ने मेंढक को डांटा.
"तुम्हें उस गंदे चूहे के घर के चक्कर नहीं लगाना चाहिए," उसने कहा.
"क्यों नहीं?" मेंढक से पूछा.
"क्योंकि वह हमसे अलग है," बतख ने कहा.
"अलग," मेंढक ने कहा, "लेकिन हम सब भी एक-दूसरे से अलग हैं."
"नहीं." मेंढक ने कहा. "हम एक-दूसरे के साथ हैं. चूहा यहाँ का नहीं है."

फिर एक दिन, सुअर ने खाना बनाते समय कुछ लापरवाही बरती. कढ़ाई में से आग की लपटें ऊपर उठीं. जल्द ही आग फैल गई और आग की लपटों से उसका घर जलने लगा.

सुअर घबराकर बाहर भागा. "बचाओ! बचाओ!!" वो चीखा. पर चूहा वहां पहले से ही मौजूद था. वो नदी से पानी की बाल्टियां भर-भर करके लाया और आग बुझने तक वो लपटों से लड़ता रहा.

सुअर के घर की छत पूरी तरह से नष्ट हो गई. सभी जानवर इस सदमे से दुखी थे. अब सुअर बेघर था. लेकिन वह चिंतित नहीं है. अगले दिन, चूहा हथौड़ी और कीलें लेकर आया. उसने फटाफट घर की छत की मरम्मत कर दी!

एक दिन खरगोश कुछ पानी लाने के लिए नदी पर गया. अचानक वो फिसल गया और गहरे पानी में गिर गया. खरगोश को तैरना नहीं आता था. "बचाओ बचाओ!" खरगोश जोर से चिल्लाया.
चूहे ने सबसे पहले खरगोश का चिल्लाना सुना और फिर उसने सीधे पानी में डुबकी लगाई. जल्दी से उसने खरगोश को बचाया और उसे सुरक्षित, सूखे किनारे पर ले आया.
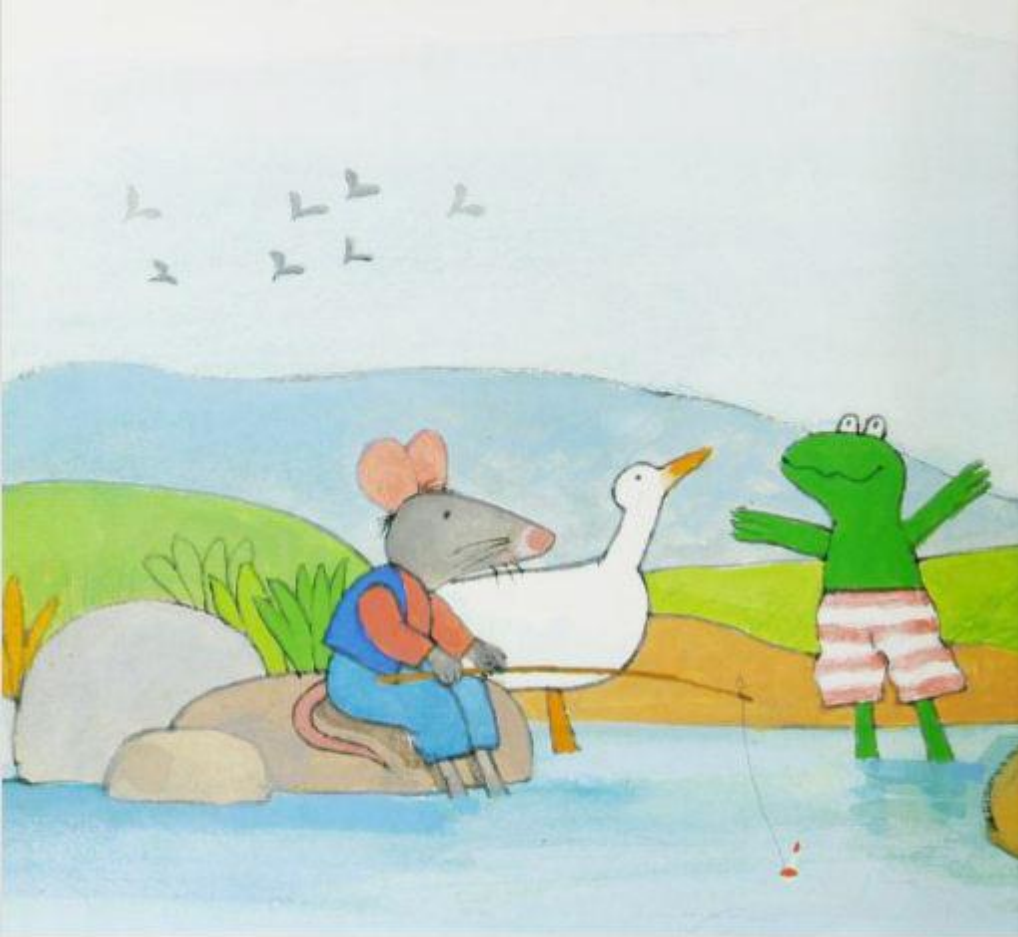
अब सब सहमत थे कि चूहा वहां रह सकता है. चूहा बड़ा खुशमिजाज था और अगर किसी को मदद की जरूरत होती तो वो हमेशा मौके पर मौजूद रहता था.
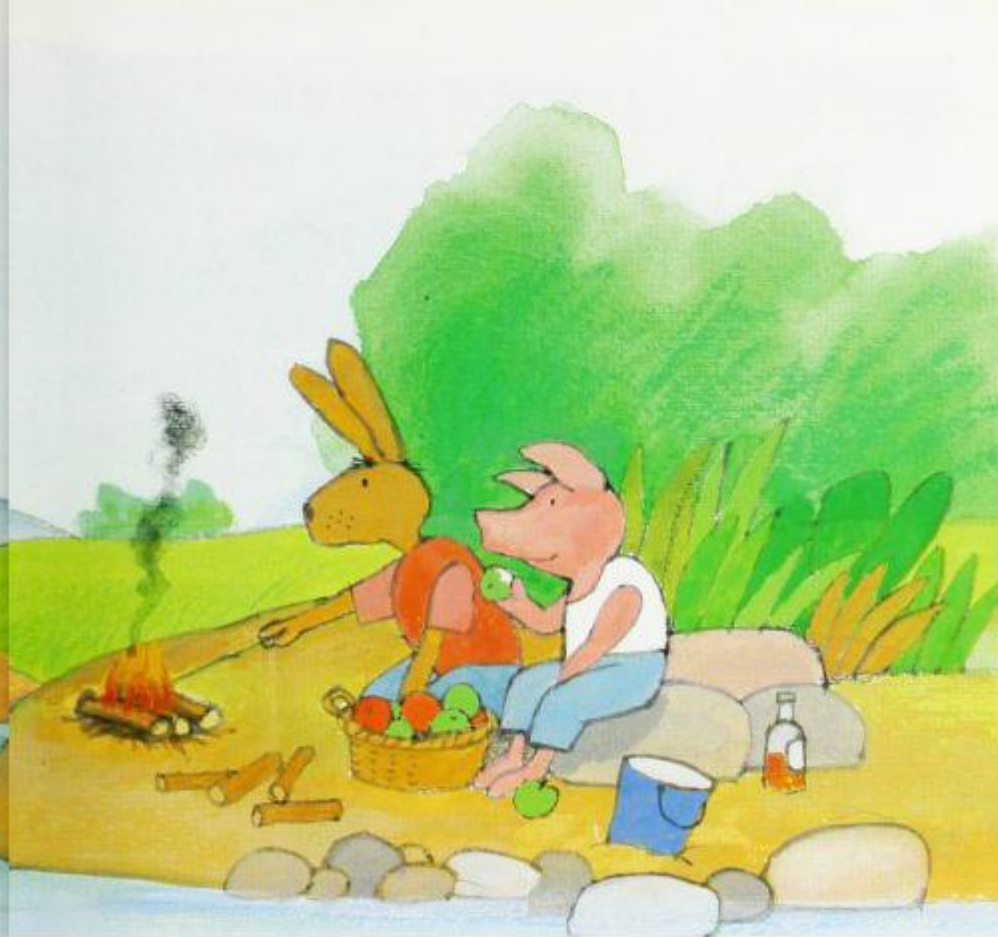
चूहा अक्सर मजेदार चीजों के बारे में सोचता था - वो नदी के किनारे पिकनिक आयोजित करता और बाकी जानवरों को जंगल में सैर कराने ले जाता था.

शाम को चूहा उन्हें चीन के ड्रेगन की रोमांचक कहानी सुनाता था.
उसने उन्हें दुनिया के बारे में कई अन्य रोचक बातें बताईं.
वो एक बहुत ही खुशहाल चूहा था और चूहे के पास बताने के लिए
हमेशा नए-नए किस्से होते थे.

लेकिन एक दिन जब मेंढक अपने दोस्त चूहे से मिलने गया तो उसे
अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ. चूहे का तम्बू ज़मीन पर लिपटा
हुआ पड़ा था और चूहा अपने झोले के साथ वहाँ खड़ा था.

"क्या तुम जा रहे हो?" आश्चर्य से मेंढक ने पूछा.
"हाँ, अब आगे की यात्रा का समय आ गया है," चूहे ने कहा. "मैं
अमेरिका जा रहा हूं क्योंकि वो मुल्क मैंने पहले कभी नहीं देखा है."
यह सुनकर बेचारा मेंढक तबाह हो गया.

उसके बाद वो गन्दा, लेकिन अच्छे दिल वाला, मददगार और चतुर चूहा वहां से चला गया. उसके मित्र तब तक हाथ हिलाते रहे जब तक वो पहाड़ी के पीछे ओंझल नहीं हुआ. "हम उसे हमेशा याद करेंगे," खरगोश ने आह भरते हुए कहा.

आँखों में आंसुओं के साथ, मेंढक, बतख, खरगोश और सुअर ने अपने दोस्त चूहे से अलविदा कहा. "शायद मैं एक दिन वापस आऊं," चूहा ने ख़ुशी से कहा. "फिर मैं नदी पर एक पुल का निर्माण करूँगा."

हाँ, चूहा अपने पीछे एक सन्नाटा और सूनापन छोड़ गया था. लेकिन उसकी बनाई बेंच अभी भी वहीं थी और उसके चारों दोस्त अक्सर उसपर एक-साथ बैठकर अपने अच्छे दोस्त चूहे को याद करते थे.

समाप्त
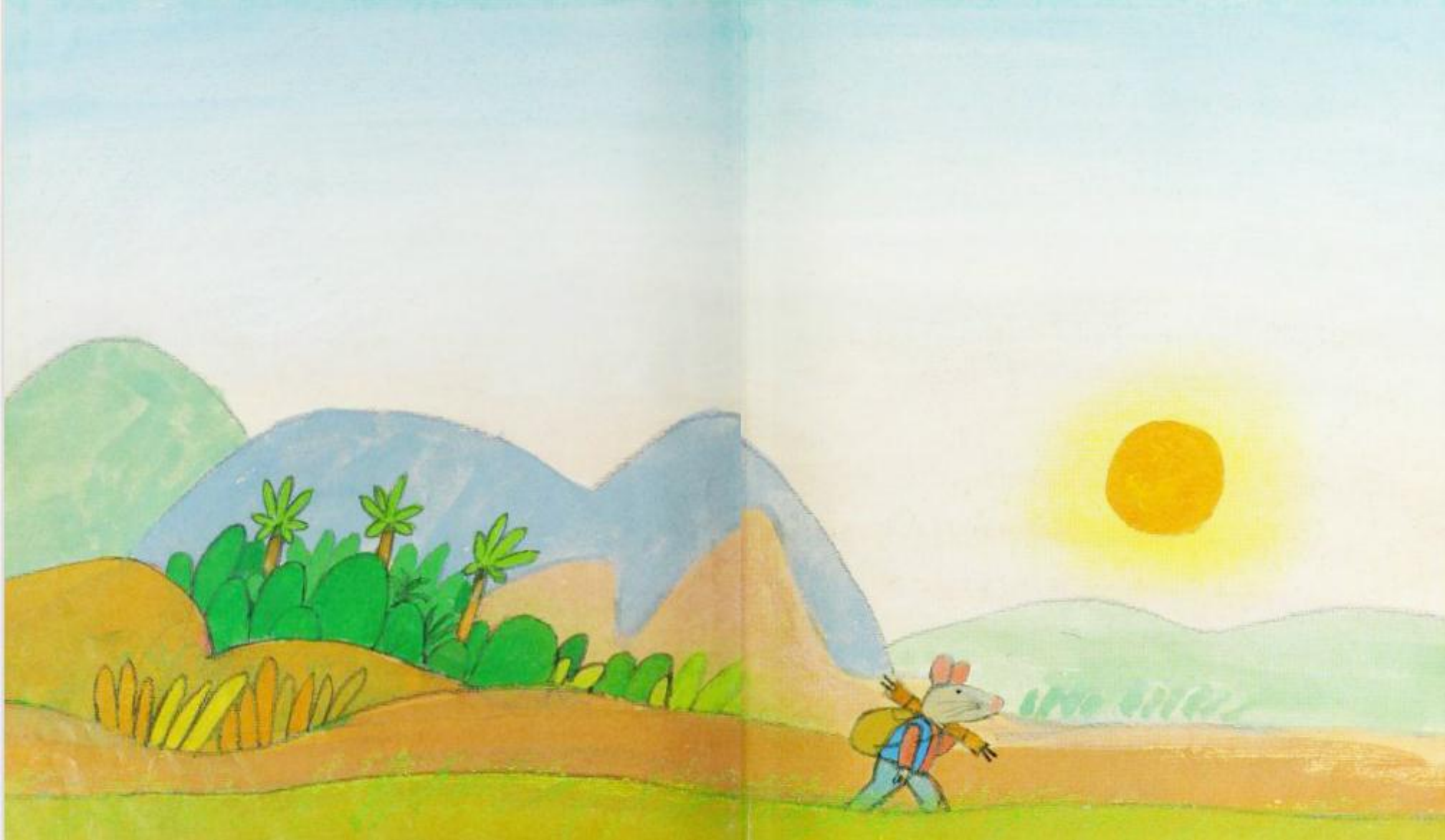
जब एक अजनबी जंगल में आता है, तो मेंढक के दोस्त उसे शक की निगाह से देखते हैं. उन्हें लगता है कि चूहा गंदा और चोर होगा. लेकिन मेंढक को इस बात पर पूरा यकीन नहीं है. वह खुद पता लगाने का फैसला करता है और चूहे के साथ दोस्ती बनाता है. लेकिन बाद में चूहा कई आपात स्थितियों में दूसरों का बचाव करता है. अंत में दूसरों को एहसास होता है कि अलग दिखने वाला जानवर भी बहुत अच्छा और नेक हो सकता है!

मैक्स एक नायब कलाकार है, जिनकी किताबें कोमल हास्य के साथ महत्वपूर्ण विषयों को छूती हैं.